REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 7 | APRIL - 2021

कृषि विकास कार्यक्रमों का कृषि उत्पादन पर प्रभाव (धार जिले के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ.राजेन्द्र सिंह वाघेला[1] , राजेश मईड़ा[2]
[1]प्राध्यापक (वाणिज्य) , श्री अटल बिहारी वाजपेयी, शास.कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)
[2]सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य) , शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, धार (म.प्र.)

1. प्रस्तावना :–

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि प्रधान व्यवसाय होने के कारण कृषि ग्रामीणों की आय का सबसे महत्वपूर्ण स्त्रोत, जीवनयापन का प्रमुख साधन, रोजगार, ग्रामीण उद्योग–धंधों का आधार, ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ तथा आर्थिक विकास की कुंजी हैं।[1] भारत की 54.60 प्रतिशत जनसंख्या का मुख्य व्यवसाय कृषि तथा कृषि मजदूरी हैं।[2] देश की अर्थव्यवस्था तथा आर्थिक विकास में कृषि का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। भारत में आधुनिक कृषि पद्धति का अविर्भाव हरित क्रांति से हुआ। हरित क्रान्ति के पश्चात् सम्पूर्ण देश में कृषि क्षेत्र में विकास की लहर दौड़ गई। हरित क्रान्ति का प्रभाव नगरों से लगे हुए गाँवों विशेषकर जहाँ सिंचाई की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध थी, शिक्षा का स्तर उच्च था एवं जागरूकता आधुनिक कृषि तकनीकी के उपयोग की जानकारी के साथ आर्थिक रूप से सम्पन्न क्षेत्रों में हुआ, किन्तु पिछड़े क्षेत्रों में परम्परागत कृषि तकनीकी और साधनों से कृषि कार्य किए जा रहे हैं।[3]

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् कृषि विकास कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दिया गया। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि के विकास एवं उत्पादन वृद्धि हेतु केन्द्र एवं राज्य सरकारों के द्वारा कृषकों के आर्थिक विकास के लिए विभिन्न कार्यक्रम, प्रावधान एवं योजनाएँ संचालित है जिनमें फसलों की बीमारियों की रोकथाम के लिए दवाईयों की व्यवस्था, रासायनिक उर्वरकों, उन्नत बीजों, दवाईयों, सिंचाई के साधन व आधुनिक उपकरण के साथ वित्तीय सहायता, कृषि प्रशिक्षण सम्मिलित हैं। परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन में लगातार वृद्धि हुई है।[4] कृषि उपकरण के क्षेत्र में नेनो तकनीक सम्मिलित हैं। इनमे जंग रोधी व पराबैंगनी किरणों के विरुद्ध उपकरण संरचना, कृषि उपकरण दृढ़ यांत्रिक घटक, यांत्रिक रासायनिक खरपतवार नियंत्रण, नेनो तकनीक का वैकल्पिक ईंधन व पर्यावरण प्रदूषण में उपयोग भी शामिल हैं।[5] शासन द्वारा संचालित कृषि योजनाओं का कृषि उत्पादकता में परिवर्तन का मूल्यांकन करना अध्ययन का मुख्य उद्देश्य हैं।

अध्ययन के उद्देश्य :–

- धार जिले में संचालित विभिन्न कृषि विकास कार्यक्रमों का कृषि उत्पादन पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- धार जिले में कृषि विकास कार्यक्रमो के प्रभावी क्रियान्वयन में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना ।

परिकल्पना :–

Ho: कृषि विकास कार्यक्रमों तथा कृषि उत्पादन में सम्बन्ध नहीं है।

2. शोध प्रविधि :–

धार जिले में **''कृषि विकास कार्यक्रमों का कृषि उत्पादन पर प्रभाव''** को जानने के लिए प्राथमिक व द्वितीयक समकों पर आधारित है। द्वितीयक संमकों के संकलन में विभिन्न जर्नल्स व आलेखों का प्रकाशन, कृषि मंत्रालय की रिपोर्ट, वार्षिक प्रतिवेदन, इंटरनेट आदि से उपलब्ध जानकारी का प्रयोग किया गया है।

प्राथमिक समंकों का संकलन धार जिले को समग्र मानते हुए जिले के सात विकासखण्डों के 5–5 गाँवों का चयन किया गया है। प्रत्येक गाँव़ से 10–10 उत्तरदाता को दैव निदर्शन पद्धति द्वारा चुना गया है। शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन का तुलनात्मक अध्ययन जानने के लिए कुल 350 उत्तरदाताओं का चयन कृषकों की आर्थिक परिस्थितियों को समझने में सहायक है।

तथ्य विश्लेषण :–

दैव निदर्षन विधि से चयनित 350 कृषि योजनाओं के हितग्राही उत्तरदाताओं की व्यक्तिगत जानकारी का वर्णन तालिका क्रमांक 1 में किया गया है –

तालिका क्रमांक – 1
उत्तरदाताओं की सामान्य जानकारी

क्र.	विवरण	वर्गीकरण	प्रतिशत
1	आयु	18 से 30 वर्ष	26.86
		31 से 45 वर्ष	48.86
		45 वर्ष से अधिक	24.29
2	षिक्षा	अषिक्षित	39.14
		प्राथमिक	41.14
		माध्यमिक अथवा अधिक	19.71
4	कृषि भूमि का आकार	3 बीघा से कम	36.29
		3 से 5 बीघा	42.57
		5 बीघा से अधिक	21.14

स्रोत :– सर्वेक्षण आधारित समंक।

आयु वर्ग के अन्तर्गत सर्वाधिक 48.86 प्रतिषत उत्तरदाता 31 से 45 वर्ष आयु वर्ग के अन्तर्गत है। षिक्षा के अन्तर्गत सर्वाधिक 41.14 प्रतिषत प्राथमिक षिक्षित, 39.14 प्रतिषत अषिक्षित 19.71 प्रतिषत माध्यमिक अथवा अधिक स्तर तक साक्षर है। कृषि भूमि का आकार के अन्तर्गत 36.29 प्रतिषत 3 बीघा से कम, 42.57 प्रतिषत 3 से 5 बीघा एवं 21.14 प्रतिषत 5 बीघा से अधिक कृषि भमि के स्वामी है। खरीफ मौसम में बोई जाने वाली प्रमुख फसलों के अन्तर्गत चयनित क्षेत्र में धान, मक्का, सोयाबीन, ज्वार, तथा मूंगफली प्रमुख फसल है। सिंचित क्षेत्र में बोई जाने वाली फसल के अन्तर्गत व्यापारिक फसल सोयाबीन का रकबा सर्वाधिक है रबी मौसम में बोई जाने वाली प्रमुख फसलों के अन्तर्गत गेहूँ, चना, मक्का, अन्य फसलों के अन्तर्गत दाल, सब्जी, आदि उत्पादित की जाती है। सिंचाई की पूर्ति होने पर कृषकों का व्यापारिक फसलों की ओर रूझान अधिक रहता है जबकि सिंचाई की पूर्ति नहीं होने पर अनाज फसलों के उत्पादन एवं पारिवारिक आवष्यकता हेतु संग्रहण की और अधिक रूझान रहता है।

कृषि विकास योजना की जानकारी :–

कृषि विकास योजनाओं का प्रमुख लक्ष्य कृषि क्षेत्रफल, उत्पादन व उत्पादकता में वृद्धि करना। कृषि पर आश्रित कृषकों के आर्थिक विकास, रोजगार में वृद्धि, एवं बढ़ती जनसंख्या के खाद्यान्न की पूर्ति की सुनिष्चितता प्रमुख लक्ष्य है। सदियों से चली आ रही परम्परागत अल्प उत्पादक एवं मानव श्रम पर निर्भर कृषि तकनीकी में परिवर्तन कर आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान करना विभिन्न कृषि योजनाओं का प्रमुख लक्ष्य है। धार जिले में कृषि विकास से सम्बन्धित अनेक योजनाऐं संचालित है जिनमें फल क्षेत्र विस्तार, फसलोंपरांत प्रबंधन, यंत्रीकरण, पुष्प क्षेत्र विस्तार, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, बागवानी यंत्रीकरण, मसाला क्षेत्र विस्तार, सब्जी क्षेत्र विस्तार योजना, संरक्षित खेती आदि प्रमुख योजनाओं का प्रमुख उद्देष्य जिले में खाद्यान्न, फल, फूल, मसाला, व्यापारिक फसलों में आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर करने की योजनाएँ है। धार जिले के चयनित उत्तरदाताओं के द्वारा विभिन्न योजनाओं के लाभ की जानकारी का वर्णन तालिका क्रमांक 2 में किया गया है :–

तालिका क्रमांक – 2
कृषि विकास योजनाओं के लाभ का कृषि उत्पादन पर प्रभाव

क्र.	विवरण	उत्तरदाता	वृद्धि	कोई प्रभाव नहीं	प्रतिशत
1	फसल उत्पादन	55	10.57	5.14	15.71
2	सिंचाई योजना	107	19.71	10.86	30.57
3	तकनीकी यंत्र	67	12.57	6.57	19.14
4	उर्वरक	33	6.00	3.43	9.43
5	बागवानी	24	5.14	1.71	6.86
6	पशुपालन/मुर्गीपालन	41	6.00	5.71	11.71
7	जैविक खाद	10	2.00	0.86	2.86
8	अन्य	13	2.57	1.14	3.71
	कुल	**350**	**64.57**	**35.43**	**100.00**

स्रोत :– सर्वेक्षण आधारित समंक।

कृषि विकास योजना का लाभ लेने वाले हितग्राहियों के अन्तर्गत सर्वाधिक हितग्राहियों के अनुसार कृषि विकास योजनाओं के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के लाभ प्राप्ति के बाद 64.57 प्रतिषत हितग्राहियों के अनुसार कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई जबकि 35.43 प्रतिषत के अनुसार कृषि उत्पादन यथावत है। कृषि उत्पादन में वृद्धि के लिए उर्वरक, तकनीक उपकरण, मषीनरी, जैविक खाद पद्धति में वृद्धि के प्रयास किये जा रहे है। पिछड़े क्षेत्र के कृषक कृषि संबधी प्रषिक्षण अनुभव आधारित परम्परागत कृषि को महत्व देते है। कृषि को सर्वाधिक प्रभावित करने वाले कारकों में तकनीकी का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा है। तकनीकी प्रगति ने फसल प्रतिरूप को सर्वाधिक प्रभावित किया है। भौगोलिक एवं भौतिक कारकों के सन्तुलन एवं कृषि में तकनीकी प्रयोग का संयोजन कृषि उत्पादन में असाधारण प्रगति करने में सहायक है। फसलों में प्रगति के परिणामस्वरूप खाद्यान्न क्षेत्र में कमी एवं अखाद्यान्न फसलों के उत्पादन की अधिक महत्व दिया जाने लगा है। इसके लिए बाजार में मांग एवं कीमत पक्ष महत्वपूर्ण कारक है। अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए अत्यधिक रासायनिक खादों व कीटनाषकों का प्रयोग भूमि की उर्वराषक्ति पर नकारात्मक प्रभाव करता है। कृषि क्षेत्र में वृद्धि किए बिना फसल चक्रण व मिश्रित कृषि को अपनाकर उत्पादन व उत्पादकता में वृद्धि की जा सकती है। फसल चक्र , जलवायु, मिट्टी, वातावरण, वर्षा एवं भूमि का स्वरूप आदि पर निर्भर करता है।[1] कृषि भूमि पर सिंचाई सुविधा में वृद्धि का धनात्मक प्रभाव पड़ा है।

परिकल्पना परीक्षण :–

[1] Ashok Gulati and Tim Kelley (1999), Trade Liberalization and Indian Agriculture; New Delhi; P-34

H_o: कृषि विकास कार्यक्रमों तथा कृषि उत्पादन में सह–सम्बन्ध नहीं है।
H_a: कृषि विकास कार्यक्रमों तथा कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण सम्बन्ध है।

Chi-Square Tests

	Value	df	Asymp. Sig. (2-sided)
Pearson Chi-Square	142.451[a]	3	.000
N of Valid Cases	350		

उपर्युक्त परिकल्पना के सम्बन्ध में 5 प्रतिषत सार्थकता स्तर पर 3 स्वतन्त्र संख्या के लिये χ^2 का सारणी मुल्य χ^2_t =7.815 है तथा x^2 का परिगणित मूल्य χ^2_c= 142.451 प्राप्त होता है।

अर्थात 7.815<142.451 या $\chi^2_t < \chi^2_c$ स्पष्ट है कि काई–वर्ग तालिका मूल्य से परिगणित मूल्य अधिक है। दोनों गुण स्वतन्त्र नहीं है बल्कि दोनो गुणों में घनिष्ठ सह–सम्बन्ध है। काई वर्ग विष्लेषण के अनुसार शुन्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है एवं वैकल्पिक परिकल्पना **''H_a: कृषि विकास कार्यक्रमों तथा कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण सम्बन्ध है।''** स्वीकृत होती है।

कृषि विकास कार्यक्रमों एवं कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण सम्बन्ध है। कृषि विकास कार्यक्रमों के द्वारा ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों के गरीब एवं अल्प भूमि के कृषकों को खाद, बीज, उपकरण एवं सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता के परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है। अतः कृषि विकास कार्यक्रमों तथा कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण सम्बन्ध है।

निष्कर्ष :–

कृषि विकास हेतु लाभ प्राप्ति के पश्चात् आर्थिक स्थिति में बदलाव आये है। कृषि विकास योजनाओं के परिणामस्वरूप कृषि रोजगार सुनिष्चितता से कृषि विकास एवं विविधीकरण के प्रति शासकीय योजनाओं की सार्थकत्ता सिद्ध हुई है। कृषक परम्परागत कृषि के स्थान पर आधुनिक कृषि तकनीकों के उपयोग को अधिक प्रतिमान प्रदान करने लगे है। कृषि विकास के स्तर पर कृषि एवं कृषि सहायक रोजगार के लिए संस्थागत स्त्रोंतों से ऋण प्राप्त करने से परम्परागत स्रोतों (साहूकारों, महाजन आदि) के शोषण से छूटकारा मिला है। कृषि तकनीकी परिवर्तन अध्ययन क्षेत्र में गरीबी निवारण एवं रोजगार सम्बन्धी सुरक्षा के लिए योगदान देने वाले तीव्र गति से बढ़ते क्षेत्र है इससे कृषकों की आय में वृद्धि की अपार सम्भावना है। कृषि आधारित उद्योगों के विकास एवं सामग्री की उपलब्धता एवं रोजगार वृद्धि की सुनिष्चितता सहायक है। कृषि रोजगार की सुनिष्चितता होने के बाद आय में वृद्धि के साथ आर्थिक–सामाजिक स्तर में परिवर्तन आता है। बेहतर स्वास्थ दशाऐं, शिक्षा के अवसर, व विलासिता में वृद्धि होती है। किन्तु बैंको से ऋण प्राप्ति की प्रक्रिया को अधिक सरल बनाने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूची :

1. कुमार सुनील, जाट नंदकिशोर (2012) : ''भारत कृषि अनुसंधान पत्रिका'' पब्लिकेशन कृषि प्रणाली अनुसंधान परियोजना निदेशालय, मेरठ।
2. दुबे रमेश कुमार (2009) : ''खेती पर निर्भर है गाँवों की खुशहाली'', हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
3. Desai Gunvant M., P.N. Chary and S.C. Bandopadhyay (1970), "Factors Determining Demand For Pesticides", Economic and Political Weekly, Vol. (52), No. V, 26 December, p. A-181.
4. शफी मोहम्मद (1989) "Agricultural Productivity and Regional Imbalances" Concept publishing company, New delhi (1884) p. no. 25.
5. Y. C. Bhardawj (1987) :"Agriculture Growth rase Analysisin mp" Agriculture Situation India, March 1987 p. 39

6. यादव, सुबहसिंह एवं यादव सत्यभान (1997): ''ग्रामीण विकास का आधुनिक दर्शन'', सबलाइम पब्लिकेशन्स, जयपुर, भारत। पृ. क्र. 303–309